राजनीतिक प्रस्ताव

1- शहीदों को श्रृद्धांजलि

पिछले पांच वर्षों के दौरान दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अनेक कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों ने कम्युनिज्म के उदात्त आदर्शों के लिए अपने-अपने देश की पूंजीवादी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी है।

इसी दौरान मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश वर्गों के अनेक सपूतों ने अपने-अपने देशों में पूंजीवादी सत्ता के उत्पीड़न-दमन-शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर किया है।

साम्राज्यवाद एवं देशी शासक वर्गों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए दुनिया के कई देशों में राष्ट्रीय मुक्ति के लिए लड़ने वाले योद्धाओं ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है।

हमारे देश के अनके कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों पूंजीवादी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए कम्युनिज्म के उद्दात आदर्शों के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया है।

मजदूर वर्ग और उनके सहयोगी वर्गों के अनेक सपूतों ने पूंजीवादी सत्ता के उत्पीड़न-दमन-शोषण के विरुद्ध लड़ते हुए अपने प्राणों को खोया है या उसके शिकार हुए हैं।

हम इन कम्युनिस्ट योद्धाओं, राष्ट्रीय मुक्ति के लड़ाकुओं तथा मजदूर वर्ग एवं उसके सहयोगी वर्गों के सदस्यों के बलिदानों की याद में अपने लाल झण्डे को झुकाते हैं और यह संकल्प लेते हैं कि हम अपने देश में वर्ग संघर्ष को तेज करके पूंजीवादी निजाम को समाप्त करने की दिशा में आगे बढ़कर इन शहीदों के खून का बदला लेंगे।

हम इन शहीदों को अपनी भावभीनी श्रृद्धांजलि देते हैं।

*****

2- अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन के बारे में

भाकली (माले) का यह छठा सम्मेलन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन के काम को अपना सर्वोच्च व केन्द्रीय कार्य घोषित करता है। भाकली (माले) का मानना है कि भारत के सभी कम्युनिस्ट क्रातिकारी संगठनों को इस कार्य को अपनी प्राथमिकता में सर्वोच्च स्थान देना चाहिए। यह इतिहास की मांग है। हमें इस कार्य को अवश्य पूरा करना चाहिए।

भाकली (माले) विभिन्न कम्युनिस्ट क्रातिकारी संगठनों के बीच द्विपक्षीय व बहुपक्षीय वार्ताओं का स्वागत करता है। भाकली (माले) पहले ही घोषित कर चुकी है कि एकता वार्ताओं के लिए दो ही आवश्यक शर्तें हैं। पहली, ऐसे सभी पूर्व पार्टी संगठन मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा को अपनी पथ प्रदर्शक विचारधारा के रूप में स्वीकारते हों तथा दूसरी, ऐसे सभी संगठनों का नेतृत्वकारी निकाय पेशेवर क्रांतिकारियों से मिलकर बना हो। एकता वार्ताओं के प्रारम्भ होने के बाद रणनीतिक लाइन, कार्यक्रम, रणकौशलात्मक लाइन, सांगठनिक लाइन, कार्यशैली आदि को वार्ताओं का विषय बनाया जा सकता है। यह सम्मेलन सभी कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठनों से इस कार्य के लिए आगे आने का आह्वान करता है।

यह सम्मेलन भाकली (माले) के विभिन्न ग्रुपों से एकता वार्ताओं को पुनः प्रारम्भ करने की अपील करता है। एक ग्रुप जो भारतीय क्रांतिकारी शिविर के विघटन जैसी गलत धारणाओं का प्रचार कर रहा है, को अपनी ऐसी गलत अवस्थितियां छोड़नी चाहिए तथा पुनर्गठन के प्रयासों के लिए आगे आना चाहिए। भाकली (माले) धारा के इस ग्रुप को छोड़कर अन्य ग्रुपों से पुनर्गठन कमेटी, भाकली (माले) की एक-दो चक्र की वार्ताएं चली थीं। पुनर्गठन कमेटी को गतिरोध आ जाने के कारण वार्ताओं के बंद होने की दुर्भाग्यपूर्ण घोषणा करनी पड़ी थी। यह गतिरोध कई प्रयासों के बावजूद भी टूट नहीं सका था।

यह सम्मेलन भाकली (माले) के सभी ग्रुपों से एकता वार्ताओं के लिए आगे आने का आह्वान करता है।

कम्युनिस्ट ग्रुपों के बीच एकता सर्वहारा वर्ग की सेवा करने, उसकी पार्टी का पुनर्गठन करने व सर्वहारा वर्ग के एतिहासिक मिशन को हासिल करने के लिए आवश्यक है। सर्वहारा विचारधारा पर दृढ़ता पूर्वक खड़े होकर तथा संकीर्णतावाद को त्याग कर ही हम सच्चे सर्वहारा रुख का परिचय दे सकते हैं। विखंडन, विखराव से सर्वहारा वर्ग की पांतों का पहले ही काफी नुकसान हो चुका है। गैर सर्वहारा रुख का परिचय देकर इस नुकसान को और न बढ़ाया जाय। अविलम्ब एकता वार्ता पुनः शुरू की जाय।

*****

3- नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के विचारधारात्मक भटकावों के बारे में

नेपाल की नयी जनवादी क्रांति आज एक महत्वपूर्ण मुकाम पर खड़ी है। आने वाले कुछ महीने इस बात का फैसला करेंगे कि यह क्रांति किस ओर बढ़ती है। क्या यह क्रांति केवल एक बुर्जुआ जनतंत्र कायम करने तक ही सिमट कर रह जायेगी या यह आगे विकसित होगी तथा नव जनवादी राज्य कायम करते हुए समाजवाद की ओर बढ़ जायगी, इसका फैसला आगे आने वाले दिनों में होना है। इससे नेपाल की मजदूर-मेहनतकश जनता के भविष्य का भी फैसला होगा।

नेपाली क्रांति के इस अहं मोड़ पर क्रांति की नेतृत्वकारी शक्ति नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो उठती है। उसकी ओर से की जाने वाली गलतियां क्रांति को तहस-नहस कर सकती हैं। लेकिन नेकपा (माओवादी) का पिछले चार-पांव सालों का विचारधारात्मक विकास हमें बहुत आश्वस्त नहीं करता बल्कि गहरी चिंता पैदा करता है। उन्होंने पिछले चार-पांच सालों में अनेक विचारधारात्मक विच्युतियां प्रदर्शित की हैं और से क्रमशः बढ़ती गई हैं। यह उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद को विकसित करने के नाम पर किया है। उनकी ये विच्युतियां नेपाल की क्रांति के लिए तो खतरा पैदा करती ही हैं, साथ ही विचारधारात्मक विभ्रम पैदा कर ये दुनिया की अन्य क्रांतिकारियों को, वैश्विक क्रांति को भी नुकसान पहुंचाती हैं। इसीलिए इन विच्युतियों के खिलाफ संघर्ष चलाकर इन्हें पराजित करना जरूरी है।

पिछले चार-पांच सालों में, खासकर नवंबर 2005 की अपनी केन्द्रीय कमेटी के प्रस्ताव में उन्होंने जो कुछ कहा है, उसका सार यह है :

आज दुनिया में एक एकल साम्राज्यवादी वैश्विक राज्य काम कर रहा है। यह अमेरिकी आधिपत्य वाला साम्राज्यवाद है। द्वितीय विश्व युद्ध और फिर शीत युद्ध के बाद जो दुनिया अस्तित्व में आयी है वह लेनिन व माओ के जमाने की दुनिया से भिन्न है और उनके द्वारा प्रस्तुत साम्राज्यवाद के विश्लेषण पुराने पड़ गये हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद इन अर्थों में पुराना पड़ गया है। यह एकल साम्राज्यवादी वैश्विक राज्य के जमाने की क्रांतियों की चुनौतियों के लिए अपर्याप्त है। इक्कीसवीं सदी की क्रांतियों के विकास व सफलता के लिए आवश्यक है कि उपरोक्त चुनौतियों का सामना किया जाय और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद को विकसित किया जाय। केवल ऐसा करके ही 21वीं सदी की क्रांतियों को अंजाम दिया जा सकता है। नेपाल की क्रांति 21वीं सदी की पहली क्रांति है। दस सालों के जनयुद्ध ने इस क्रांति को सफलता तक पहुंचाया है। नेपाल के जनयुद्ध की सफलता से नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के सामने यह प्रमुख कार्यभार उपस्थित होता है कि वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद का विकास करे। यह कार्यभार अगले दस सालों में पूरा कर लिया जायगा और तब प्रचण्ड पथ के 'वाद' में रूपान्तरित होने के सवाल को तय किया जा सकेगा।

इस बीच नेपाल की क्रांति के अध्ययन तथा बीसवीं सदी की क्रांतियों के पुनर्मूल्यांकन से कुछ सबक निकाले गये हैं जो सभी देशों की क्रांतियों पर लागू होते हैं। इन विचारों के समुच्चय को ही 'प्रचण्ड पथ' नाम दिया गया है। इसकी मुख्य बातें इस प्रकार हैं।

लेनिन के बाद सोवियत संघ में जो समाजवादी निर्माण किया गया वह स्टालिन की अधिभूतवादी सोच के कारण कई विकृतियों का शिकार था। वहां समाज व पार्टी का जो ढांचा खड़ा किया गया वह एकाश्म (Monolithic) था। सेना को वहां विघटित करने के बदले और ज्यादा औपचारिक बना दिया गया। विरोधियों का जरूरत से ज्यादा दमन किया

गया। माओ ने स्टालिन की गलतियों को समझा और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की अवधारण प्रस्तुत की। माओ की सोच को आज और ज्यादा विकसित करने की आवश्यकता है।

बीसवीं सदी की सारी क्रांतियों में क्रांतिकारियों की द्वितीय पीढ़ी को विकसित नहीं किया जा सका। स्टालिन व माओ मृत्युपर्यन्त नेतृत्व में बने रहे भले ही वे बूढ़े व अशक्त हो गये हों। इसके कारण इनके बाद वहां पुनर्स्थापना आसान हो गई।

इनको देखते हुए यह आवश्यक है कि समाजवादी समाज में बहु पार्टी व्यवस्था को इजाजत दी जाय। सामंतवाद और साम्राज्यवाद विरोधी संविधान के दायरे में बहु पार्टी प्रतियोगिता समाजवाद को मजबूत बनायेगी। यह जनता के जनवाद को यांत्रिक व औपचारिक के बदले जीवंत बनाएगी। इसके माध्यम से राज्य पर जनता के नियंत्रण, निगरानी व उसमें उसकी भागीदारी सुनिश्चित होगी। यह सब पुनर्स्थापना को रोकेगा। पूंजीवादी पुनर्स्थापना के खिालाफ जनता के विद्रोह करने के अधिकार को संविधान में दर्ज किया जाना चाहिए।

क्रांति के बाद सेना को जनता में घुल-मिल जाना चाहिए और समूची जनता को ही समाजवाद की रक्षा करनी चाहिए। समाजवादी देश व समाज की रक्षा का यही सर्वोत्तम तरीका है।

क्रांति के नेताओं को समय रहते नेतृत्व से हट जाना चाहिए। नेपाली क्रांति का नेतृत्व सत्ता दखल के बाद सत्ता में नहीं होगा। वह रोजमर्रा के प्रशासनिक कार्यों के बदले विचारधारात्मक कार्य करेगा तथा नयी पीढ़ी को तैयार करने के लिए वातावरण मुहैय्या करेगा।

आज एकल साम्राज्यवादी वैश्विक राज्य के तहत जो क्रांतियां होंगी वे वैश्विक पहल के बिना विजयी नहीं हो सकतीं यानी वैश्विक साम्राज्यवाद को चुनौती दिये बिना विकसित व सफल नहीं हो सकतीं और न बनी रह सकती हैं। क्रांतियां अभी भी अलग-अलग देशों में होंगी लेकिन उन्हें जल्दी ही वैश्विक साम्राज्यवादी राज्य से टकराना होगा। इन क्रांतियों में विद्रोह और दीर्घकालीन लोकयुद्ध के तत्वों का 'सम्मिलन' हो जायगा। यह सम्मिलन विकसित व पिछड़े सभी देशों में होगा। जिन देशों में क्रांतियां सफल हो जायेंगी वे वैश्विक क्रांति के लिए आधार क्षेत्र का काम करेंगे। चूंकि नेपाली क्रांति 21वीं सदी की पहली क्रांति है इसलिए आज यह वैश्विक क्रांति का आधार क्षेत्र है।

रिम की कमी यह है कि वह पुरानी क्रांतियों की रणनीति व रणकौशल की तो विस्तार से व्याख्या करता है लेकिन नयी चुनौतियों को स्वीकार नहीं करता। इस तरह वह रूढ़िवाद का शिकार है।

पेरू की क्रांति इसलिए ठहराव का शिकार हो गई कि पेरू की पार्टी ने रणनीतिक दृढ़ता साथ रणकौशलात्मक लचीलेपन का परिचय दिया और रणनीतिक दृढ़ता पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया, उसने बदली विश्व परिस्थितियों में ठोस स्थिति का ठोस विश्लेषण नहीं किया तथा वह भाववादी तरीके से नेतृत्व का बढ़ा-चढ़ा कर महिमामंडन करने में लग गई।

नेकपा (माओवादी) की इन सारी बातों के दो प्रस्थान बिंदु हैं और दोनों ही गलत हैं। आज की दुनिया को एकल साम्राज्यवादी वैश्विक राज्य के रूप में चित्रित करना गलत है। यह अमेरिकी साम्राज्यवाद को बाकी साम्राज्यवादियों के मुकाबले बहुत बढ़ा-चढ़ा देता है, अन्य साम्राज्यवादियों को कम करके आंकता है। इसके साथ ही यह इनके बीच के तीखे अंतर्विरोधों को आंख से ओझल कर देता है। यह साम्राज्यवाद की एकाश्म तस्वीर पेश करता है और साम्राज्यवादी वैश्विक व्यवस्था को अमेरिकी साम्राज्यवाद तक सीमित कर देता है। यह रणनीतिक और रणकौशलात्मक दोनों स्तर पर गलत निष्कर्षों तक ले जाता है। नेकपा (माओवादी) की एकल साम्राज्यवादी वैश्विक राज्य की अवधारणा के बदले आज दुनिया एक एकीकृत वैश्विक पूंजीवाद के तहत जी रही है, जो साम्राज्यवाद द्वारा नियंत्रित व नियमित है और उसके आधिपत्य में है। इस एकीकृत विश्व-पूंजीवाद में तीन बुनियादी अंतर्विरोध– श्रम व पूंजी का अंतर्विरोध, साम्राज्यवाद व उत्पीड़ित देशों, राष्ट्रों व जनता के अंतर्विरोध तथा साम्राज्यवादियों के आपसी अंतर्विरोध– काम कर रहे हैं तथा उसे गति प्रदान कर रहे हैं। इनमें पहला अंतर्विरोध प्रधान है।

दूसरा प्रस्थान बिंदु है नेपाल की क्रांति को 21वीं सदी की क्रांति मानना। यह भी गलत है। नेपाल की क्रांति 21वीं सदी में हो रही है लेकिन यह इस सदी की क्रांति नहीं है। यह 21वीं सदी में हो रही 20वीं सदी की क्रांति है। यह बीसवीं सदी की नव जनवादी क्रांतियों की श्रृंखला की छूटी हुई कड़ी है। यह काफी देर से हो रही बीसवीं सदी की क्रांति है। उसमें भी यह कि यह अति पिछड़े व छोटे से देश में हो रही है। नेपाल क्रांति पूर्व चीन से भी काफी पिछड़ा देश है।

21वीं सदी की क्रांतियां समाजवादी क्रांतियां होंगी। वे नव जनवादी क्रांति से शुरू होने वाली क्रांतियां नहीं होगी। बल्कि शुरू से ही समाजवादी क्रांतियां होंगी। वे निजी सम्पत्ति के सामंतवादी रूप पर हमले से शुरू नहीं होंगी। बल्कि निजी सम्पत्ति के पूंजीवादी रूप पर हमले से होंगी। वे सीधे सामूहिक सम्पत्ति की स्थापना के लिए, निजी सम्पत्ति के खात्मे के लिए होंगी। इससे स्पष्ट है कि क्यों नेपाल की क्रांति 21वीं सदी की क्रांति नहीं है।

चूंकि नेपाल की क्रांति 21वीं सदी की क्रांति नहीं है, यह देर से हो रही बीसवीं सदी की क्रांति है और वह भी एक अत्यंत पिछड़े व छोटे से देश में हो रही क्रांति जिससे दुनिया के वर्ग शक्ति संतुलन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता इसलिए इससे ऐसे कोई निष्कर्ष नहीं निकलते जो बीसवीं सदी की क्रांतियों पर कोई नई रोशनी डालते हों या जिनसे 21वीं सदी की क्रांतियों का मार्ग रोशन होता हो। बीसवीं सदी की क्रांतियों की कमियों-खामियों पर कोई महत्वपूर्ण रोशनी आज किसी साम्राज्यवादी देश में होने वाली समाजवादी क्रांति से या कई सारे पिछड़े देशों में एक साथ होने वाली समाजवादी क्रांति से ही पड़ सकती है। ये ही 21वीं सदी की क्रांतियों का मार्ग भी आलोकित कर सकती हैं।

इसके मुकाबले नेपाल की नव जनवादी क्रांति को 21वीं सदी की क्रांति मान लेना वह विचारधारात्मक विभ्रम पैदा करता है जो ढ़ेरों विचारधारात्मक भटकावों की ओर ले जाता है। जिन बातों का केवल नेपाल की क्रांति के लिए रणनीतिक या रणकौशलात्मक महत्व है उन्हें सार्वजनीन महत्व का घोषित कर देने से ढ़ेरों गलत निष्कर्ष निकलते हैं। इसी तरह नेपाली क्रांति के अत्यंत विशिष्ट व सीमित अनुभवों से रूस व चीन की विश्व ऐतिहासिक महत्व की क्रांतियों का मूल्यांकन करने से भी ढ़ेरों गलत निष्कर्ष निकलते हैं।

सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण, उसकी कमियों-खामियों तथा उसमें स्टालिन की भूमिका के सम्बन्ध में माओ से आगे की बात करना वस्तुतः बुर्जुआ वर्ग के प्रचार का शिकार हो जाना है। इस संबंध में माओ ने जो बातें पहले ही कह दी हैं, यदि उनसे इतर कुछ कहने की कोशिश की जाती है तो वह भाववादी होगा तथा बुर्जुआ प्रचार से प्रभावित होगा। इसी तरह आम तौर पर जनवाद और खास तौर पर समाजवादी समाज में जनवाद के बारे में यदि लेनिन से इतर कोई बात कही जाती है तो वह निश्चित तौर पर बुर्जुआ जनवादी पूर्वाग्रह से ग्रस्त होगा। यहां केवल इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि नेकपा (माओवादी) ने जनवाद व बहुपार्टी प्रतियोगिता के बारे में जितनी बातें कही हैं उनमें वर्ग व वर्गीय विश्लेषण तथा वर्गीय सारतत्व का सर्वथा अभाव है। जनवाद व बहुपार्टी प्रतियोगिता के बारे में उसी अंदाज में बात कही गई है जैसे बुर्जुआ वर्ग करता है। विचारधारात्मक प्रतिबद्धता का यह तकाजा है कि जनवाद के सवाल पर नेकपा (माओवादी) स्टालिन की ओट न ले और सीधे लेनिन की थीसिसों और उनके व्यवहार से टकराये। तब नेकपा (माओवादी) को पता चलेगा की जनवाद के सम्बन्ध में उसकी सारी बातें लेनिनवाद विरोधी हैं। जनवाद के सवाल पर नेकपा (माओवादी) की इन बातों पर चुप्पी साध लेना रिम के नेतृत्व के अवसरवाद को भी प्रदर्शित करता है क्योंकि ठीक इसी सवाल पर रिम नेतृत्व ने सी.आर.सी., सी.पी.आई. (एम.एल.) की धज्जियां उड़ा दी थीं।

क्रांतिकारी नेतृत्व के मृत्युपर्यन्त नेतृत्व में बने रहने के सवाल पर नेकपा (माओवादी) की अवधारणा अत्यंत यांत्रिक व रूपवादी है। यह नेतृत्व के सवाल पर लेनिन व माओ की धारणा व व्यवहार के खिलाफ है। नेकपा (माओवादी) यदि यह सोचती है कि असली नेतृत्व सत्ता से बाहर रह कर क्रांति को निर्देशित (guide) कर सकता है तो यह गलत है। ऐसा नेतृत्व या तो जिम्मेदारी से मुक्त स्वेच्छाचारी नियंत्रक बन जायेगा जैसे महात्मा गांधी, बाल ठाकरे या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उदाहरण दिखाते हैं या फिर वह प्रभावहीन हो जायेगा। पहली संभावना ही प्रबल है। यह समस्या का समाधान नहीं बल्कि और बड़ी समस्या होगा। वैसे क्रांतियों के इतिहास में पहले ऐसे प्रयास हो चुके हैं और असफल साबित हुए हैं। इसी तरह पुनर्स्थापना को रोकने के लिए जनता को संविधान में विद्रोह करने का अधिकार देना भी रूपवादी सोच का ही परिणाम है। मानव इतिहास में कोई भी विद्रोह या क्रांति संविधान में दर्ज अधिकार के कारण नहीं हुई बल्कि समाज विकास की गतिकी से पैदा हुयी। आगे भी यही होगा। पुनर्स्थापना करने वाले पूंजीवादी पथगामियों के खिलाफ जनता विद्रोह करेगी तो अपनी क्रांतिकारी चेतना के कारण, न कि संविधान नामक किताब में दर्ज किसी प्रावधान के कारण।

विचारधारात्मक स्तर पर इन और कुछ अन्य गलत बातों के अलावा आज वैश्विक क्रांति के संदर्भ में नेकपा (माओवादी) जो बातें करती है वह भी ठीक नहीं हैं। नेपाल की क्रांति की रणनीति व रणकौशल से निकले निष्कर्ष बाकी दुनिया पर लागू नहीं हो सकते। चीन की क्रांति के दीर्घकालीन लोकयुद्ध की यांत्रिक समझदारी तथा विद्रोह व दीर्घकालीन लोकयुद्ध के सम्बन्धों की गलत समझ के चलते नेकपा (माओवादी) अपनी 'सम्मिलन' की अवधारणा पेश करती है। वह नहीं देख पाती कि आम विद्रोह यदि देश और काल में केन्द्रित होने के बदले बिखर जाय तो दीर्घकालीन लोकयुद्ध का चरित्र ग्रहण कर लेता है। इस बात को और दुनिया की बदली हुई स्थितियों को अनदेखा कर वह दुनिया के पैमाने पर लोकयुद्ध की अवधारणा पेश करती हैं और कहती है कि सफल क्रांतियों वाले देश वैश्विक क्रांति के लिए आधार क्षेत्र का काम करेंगे। यह नेपाल की क्रांति के मॉडल का सारी दुनिया के पैमाने पर विस्तार है यानी जो कुछ नेपाल में हुआ वह वैश्विक पैमाने पर घटित होगा, समूची दुनिया बहुत बड़ा नेपाल हो जायेगी। यह वैश्विक क्रांति के प्रति अत्यंत संकुचित दृष्टिकोण तथा नेपाल की क्रांति के महत्व का अतीव विस्तार है। एक तरह से यह आत्म महिमामंडन है।

यह तब चरम पर पहुंच जाता है जब नेकपा (माओवादी) अपने सामने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद को विकसित करने का कार्यभार रखती है ओर इसे दस साल में पूरा करने का सपना देखती है। जैसा कि ठीक ही चिह्नित किया गया है, मार्क्सवाद को विकसित करने का यह तरीका मार्क्सवाद के विकास से मेल नहीं खाता। मार्क्सवाद का विकास वर्ग संघर्ष के दौरान, क्रांतियों को अंजाम देने की प्रक्रिया के दौरान हुआ है। कोई लक्ष्य निर्धारित करके इसका विकास नहीं हुआ। आगे भी ऐसे ही इसका विकास होगा। जो कोई भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद का विकास करके क्रांति को अंजाम देना चाहेगा वह विचारधारात्मक शेखचिल्ली ही साबित होगा।

नेकपा (माओवादी) की इन बातों की सीमा पेरू के संदर्भ में उजागर हो जाती है। वे पेरू की क्रांति के ठहराव और उसे लगे जबर्दस्त धक्कों का कोई वस्तुगत और संतोषजनक विश्लेषण पेश नहीं कर पाते। वे आत्मगत कारणों को गिनाने तक सीमित होकर रह जाते हैं। वे यह नहीं देख पाते कि तीन चौथाई से ज्यादा शहरी आबादी वाले पेरू में देहात आधारित दीर्घकालीन लोकयुद्ध सफल नहीं हो सकता, कि वहां नव जनवादी क्रांति की सफलता की गुंजाइश नहीं है। वहां तो शहर केन्द्रित आम विद्रोह वाली समाजवादी क्रांति ही विजयी हो सकती है।

नेकपा (माओवादी) के विचारधारात्मक भटकाव, इतिहास पर फैसला सुनाने की उनकी जल्दबाजी तथा आत्म महिमामंडन वे खतरे हैं जो न केवल नेपाल की चल रही नव जनवादी क्रांति के सामने संकट पैदा कर देते हैं बल्कि विचारधारात्मक विभ्रम पैदा करके वैश्विक क्रांति को भी नुकसान पहुंचाते हैं। नेकपा (माओवादी) को वक्त रहते इन सबसे मुक्त होना जरूरी है। यदि ऐसा नहीं होता और नेकपा (माओवादी) अपने घोषित लक्ष्य यानी दस सालों में मार्क्सवाद-लेनिनवादी-माओवाद को उच्चतर धरातल पर पहुंचाने की ओर अपनी यात्रा जारी रखती है तो हम दस साल बाद पायेंगे कि वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के वर्तमान क्रांतिकारी सिद्धान्तों में संशोधन कर एक संशोधनवादी पार्टी में तब्दील हो चुकी है। यह कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन को भारी क्षति होगी।

[टिप्पणी : मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा शब्दावली पर हमारी अवस्थिति पूर्ववत है। यहां नेकपा (माओवादी) के संदर्भ में ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद शब्दावली का इस्तेमाल किया गया है।]

*****

4- विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) के बारे में

भारत का शासक वर्ग एक के बाद एक 'विशेष आर्थिक क्षेत्रों' की घोषणा करता जा रहा है। ये 'आर्थिक क्षेत्र' देशी-विदेशी पूंजी के शोषण-उत्पीड़न के बेरहम अड्डे बनते जा रहे हैं। मजदूरों को इन क्षेत्रों में अधिकार विहीन नागरिकों में तब्दील किया जा रहा है। ये क्षेत्र पूंजीवादी जनवादी गणतंत्र के भीतर एक और "गणतंत्र" का रूप ग्रहण कर रहे हैं। साम्राज्यवादी पूंजी को आकर्षित करने के लिए इन क्षेत्रों को भारतीय शासक वर्ग द्वारा 'चीन के विशेष आर्थिक क्षेत्रों' को मॉडल के रूप में पेश किया जा रहा है और कई मामलों में तो चीन के विशेष आर्थिक क्षेत्रों से भी अधिक सुविधाएं व छूट देशी-विदेशी पूंजी को दी जा रही हैं।

हमारे देश की सामाजिक-जनवादी संशोधनवादी पार्टियां तथा कुछ यांत्रिक मार्क्सवादी इन क्षेत्रों का उत्पादक शक्तियों के विकास के नाम पर खुला समर्थन कर रहे हैं और मजदूर वर्ग तथा मेहनतकश किसानों के बीच भ्रम फैला रहे हैं। पूंजीवादी विकास के निर्मम शोषण व उत्पीड़नकारी चरित्र पर इस प्रचार के द्वारा पर्दा डाला जा रहा है। देहाती सर्वहारा व अन्य मेहनतकशों का जीवन बढ़ती गरीबी, बेरोजगारी, विस्थापन, अनिश्चित-असुरक्षित भविष्य, परम्परागत निवास स्थलों से उजड़ने आदि के कारण और अधिक कठिनाइयों से भरता जा रहा है। जिन राज्यों में ये पार्टियां सत्ता में हैं वहां अन्य शासक वर्गीय पार्टियों की तरह इन्होंने मेहनतकश किसानों से जबरदस्ती भूमि अधिग्रहण के लिए घृणित तौर-तरीके अपनाये हैं तथा मेहनतकशों के खून से अपने हाथ रंगे हैं।

'विशेष आर्थिक क्षेत्रों' के विकास के नाम पर मेहनतकश किसानों की जमीन के अधिग्रहण के लिए केन्द्र-राज्य सरकारें और पूंजीपति वर्ग हर हथकंडे का सहारा ले रहे हैं। भू-स्वामी, फार्मर, धनी किसान इस बात के लिए संघर्षरत हैं कि इन पूंजीवादी 'स्वर्गों' में उन्हें भी स्थान मिले। लूट के माल में हिस्सेदार बनने के लिए, देशी-विदेशी पूंजीपतियों के स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए ये परोपजीवी देहाती पूंजीपति वर्ग के सदस्य खुद को सभी किसानों को प्रतिनिधि के रूप में पेश कर रहे हैं। कई सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि संगठन व प्रगतिशील ताकतें इनकी इस मुहिम में इनकी पिछलग्गू बन गयी

हैं और देहाती सर्वहारा वर्ग तथा मेहनतकश वर्गों के तात्कालिक और दीर्घकालिक हितों की सही पहचान न कर पाने के कारण देहाती पूंजीपति वर्ग के हितों के पीछे उन्हें लामबंद कर रही हैं। यह गलत है।

यह सम्मेलन भारतीय शासक वर्ग की 'विशेष आर्थिक क्षेत्र' की नीति का पुरजोर विरोध करता है। यह सम्मेलन इस नीति का विरोध करते हुए मारे जाने वाले किसानों, देहाती सर्वहारा, आदिवासियों के बलिदानों के महत्व को समझता है और इसे देशी-विदेशी पूंजी के खिलाफ चल रहे संघर्ष का अभिन्न हिस्सा मानता है।

*****

5- भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की एकता कांग्रेस के बारे में

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की नवीं कांग्रेस एकता कांग्रेस के बतौर हाल ही में, 2007 में सम्पन्न हुई। इसके पहले 2001 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी [मार्क्सवादी-लेनिनवादी (पीपुल्स वार)] की नवीं कांग्रेस सम्पन्न हुई थी। दो बार नवीं कांग्रेस करना इस नवगठित पार्टी का अवसरवाद है।

यह एकता कांग्रेस न तो हमारे देश में एकल कम्युनिस्ट पार्टी का पुनर्गठन है और न ही एकल कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन की प्रक्रिया में यह एकता कांग्रेस सकारात्मक योगदान देती है। हालांकि लगभग दो वर्ष पूर्व MCCI और CPI (ML)-PW के बीच जो एकता हुई वह सकारात्मक घटना थी।

यह एकता कांग्रेस भारतीय समाज व राज व्यवस्था, भारतीय समाज के बुनियादी और प्रधान अंतर्विरोध, क्रांति की मंजिल, क्रांति के दोस्त और दुश्मन वर्गों और क्रांति की मुख्य प्रेरक शक्तियों और मुख्य लड़ाकू शक्तियों के बारे में गलत आकलन और निर्धारण करती है। इसी प्रकार यह अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का वस्तुगत आकलन नहीं करती। यह मजदूर वर्ग के बीच अपने कामों को केन्द्रित कर उसके बीच से कम्युनिस्ट कतारों में अधिकाधिक संख्या में भरती करने का कार्यभार अपने हाथ में नहीं लेती। इस प्रकार, यह गलत कार्यक्रम और राजनीतिक दिशा पर चलने वाले संगठन की एकता कांग्रेस है।

यह एकता कांग्रेस भारतीय क्रांति के मार्ग का निर्धारण दीर्घकालिक लोकयुद्ध के बतौर करती है और वास्तविकता से एकदम विपरीत क्रांतिकारी परिस्थिति की शानदार मौजूदगी को स्वीकार करती है। ये दोनों ही बातें गलत और पुरानी गलती का जारी रूप हैं। इसकी राजनीतिक कार्यदिशा के ऊपर सैनिक कार्यदिशा हावी है। यह मजदूर वर्ग और उसके सहयोगी वर्गों के वर्ग संघर्ष से कटे हुए छापामार युद्ध करने की वकालत करती है। यह वामपंथी दुस्साहसवाद के गम्भीर भटकावों से ग्रस्त एकता कांग्रेस है।

इन सब कारणों से, सर्वभारतीय पैमाने पर एकल कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन के केन्द्रीय कार्यभार को अंजाम देने का संघर्ष और जटिल व टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है।

यह सम्मेलन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की एकता कांग्रेस में पारित वामपंथी दुस्साहसवादी कार्यदिशा के साथ-साथ कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में व्याप्त संशोधनवादी भटकावों के विरुद्ध समझौताविहीन विचारधारात्मक राजनीतिक व सांगठनिक कार्यदिशा सम्बन्धी निर्मम संघर्ष चलाकर सर्वभारतीय एकल कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन के केन्द्रीय कार्यभार को पूरा करने में अपनी क्षमता भर योगदान करने का संकल्प लेती है।

*****